OPEN ACCESS

Int. Jr. of Contemp. Res. in Multi. *PEER-REVIEWED JOURNAL* *Volume 4 Issue 5 [Sep- Oct] Year 2025*

Review Article

नई शिक्षा नीति 2020 में हिन्दी भाषा का दृष्टिकोण

डॉ. समीना कुरैशी

सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, जे.ई.एस. कॉलेज, फरहदा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

Corresponding Author: *डॉ. समीना कुरैशी

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17266814

सारांश

राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में भाषा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, विशेषकर भारत जैसे बहुभाषी राष्ट्र में। हिन्दी एक संपर्क भाषा के रूप में राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक संरक्षण और शैक्षिक सशक्तिकरण की धुरी है। नई शिक्षा नीति (NEP-2020) मातृभाषा व स्थानीय भाषाओं में शिक्षण को प्रोत्साहित कर हिन्दी की प्रासंगिकता को और अधिक मजबूत करती है। उच्च शिक्षा, तकनीकी व डिजिटल संसाधनों में हिन्दी के संवर्धन से यह केवल सांस्कृतिक नहीं बल्कि ज्ञान-विज्ञान और शोध की भी भाषा बन रही है। यद्यपि अंग्रेज़ी के वर्चस्व और गुणवत्तापूर्ण हिन्दी संसाधनों की कमी जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं, फिर भी गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक सामग्री, अनुवाद, डिजिटलीकरण और शिक्षक-प्रशिक्षण जैसे उपाय हिन्दी को वैश्विक स्तर पर भी स्थापित कर सकते हैं। इस प्रकार हिन्दी भाषा न केवल शिक्षा और शोध की सशक्त आधारशिला है, बल्कि भारत की सांस्कृतिक शक्ति और विश्व पटल पर उसकी पहचान की धुरी भी है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 05-09-2025
- **Accepted:** 15-09-2025
- **Published:** 04-10-2025
- **IJCRM:**4(5); 2025: 256-258
- **©2025, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

कुरैशी स. नई शिक्षा नीति 2020 में हिन्दी भाषा का दृष्टिकोण. Int J Contemp Res Multidiscip. 2025 4(5):256-258.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

कुंजी शब्द: राष्ट्र निर्माण, हिन्दी भाषा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020), मातृभाषा आधारित शिक्षा, भाषाई एकता

प्रस्तावना

राष्ट्र निर्माण में भाषा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है क्योंकि भाषा ही विचार, ज्ञान और संस्कृति के आदान-प्रदान का प्रमुख माध्यम है। यह केवल संचार तक सीमित न रहकर राष्ट्रीय पहचान, सामाजिक एकता और सांस्कृतिक निरंतरता का भी आधार है। भारत जैसे विशाल और बहुभाषी राष्ट्र में भाषा का महत्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि यहां भाषाई विविधता राष्ट्र की शक्ति भी है और चुनौती भी। ऐसे परिदृश्य में एक ऐसी भाषा की आवश्यकता होती है जो विभिन्न भाषाई समुदायों को जोड़कर राष्ट्रीय एकता का सेतु बन सके।

इस दृष्टि से हिन्दी भाषा का महत्व विशेष रूप से रेखांकित होता है। हिन्दी भारतीय भाषाओं के बीच संपर्क की भाषा बनकर देश की विविधता में एकता को मजबूती प्रदान करती है। शिक्षा, साहित्य,

© 2025 डॉ. समीना कुरैशी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रशासन और संचार जैसे क्षेत्रों में इसके व्यापक प्रयोग ने इसे सर्वमान्य स्थान दिलाया है। साथ ही हिन्दी जन-जन की भाषा होने के कारण सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण में भी योगदान देती है। वर्तमान समय में हिन्दी का महत्व केवल सांस्कृतिक दायरे तक सीमित नहीं रहा है, बल्कि शैक्षिक, व्यावसायिक और शोधात्मक परिप्रेक्ष्य में भी तेजी से बढ़ रहा है। यह ज्ञान और विज्ञान की भाषा बनने की दिशा में निरंतर अग्रसर है, जिससे यह न केवल भारत की आंतरिक शक्ति को मजबूत करती है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भारत की पहचान को भी सशक्त रूप से प्रस्तुत करने की क्षमता रखती है। इस प्रकार हिन्दी आज राष्ट्र निर्माण की एक सशक्त धुरी और विकास यात्रा की अनिवार्य आवश्यकता बन चुकी है।

NEP-2020 और भाषा पर बल

मातृभाषा/स्थानीय भाषा में शिक्षा पर केंद्रित दृष्टिकोण

नई शिक्षा नीति 2020 इस सिद्धांत पर बल देती है कि प्रारंभिक स्तर पर शिक्षण का सबसे प्रभावी माध्यम मातृभाषा या स्थानीय भाषा होती है। बच्चे जब अपनी भाषा में शिक्षा प्राप्त करते हैं, तो वे विषयवस्तु को सहजता से समझ पाते हैं, रचनात्मकता विकसित होती है और सांस्कृतिक जड़ों से उनका जुड़ाव भी सुदृढ़ होता है। इस नीति के अनुसार कम से कम कक्षा पाँच तक, और जहाँ संभव हो कक्षा आठ तक, मातृभाषा या स्थानीय भाषा में शिक्षण को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

बहुभाषी शिक्षा एवं त्रिभाषा सूत्र

NEP-2020 बहुभाषी शिक्षा की अवधारणा को प्रोत्साहित करती है। इसमें विद्यार्थियों को मातृभाषा के साथ अन्य भारतीय भाषाओं तथा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेज़ी के संपर्क में आने का अवसर मिलता है। नीति ने त्रिभाषा सूत्र को लचीले रूप में अपनाने की सिफारिश की है, ताकि प्रत्येक क्षेत्र और राज्य अपनी भाषायी विशेषताओं के अनुरूप इसका क्रियान्वयन कर सके। इस दृष्टिकोण से भाषाई विविधता का संरक्षण होगा और राष्ट्रीय एकता की भावना भी और प्रबल बनेगी।

NEP-2020 में हिन्दी का स्थान

संपर्क भाषा और राष्ट्रीय एकता का माध्यम

NEP-2020 में हिन्दी को संपर्क भाषा के रूप में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। भारत के बहुभाषी परिदृश्य में हिन्दी विभिन्न भाषाई समूहों को जोड़कर राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक समरसता को मजबूत करती है। यह केवल संवाद का साधन नहीं, बल्कि साझा पहचान और सामाजिक एकजुटता का प्रतीक भी है।

उच्च शिक्षा, तकनीकी व डिजिटल संसाधनों में हिन्दी का संवर्धन

नीति में उच्च शिक्षा और तकनीकी क्षेत्रों में हिन्दी सहित भारतीय भाषाओं में अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराने पर बल दिया गया है। साथ ही डिजिटल प्लेटफॉर्म, ई-लर्निंग और शोध संसाधनों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखा गया है। इससे विद्यार्थियों को अपनी भाषा में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त होगी और हिन्दी शोध, नवाचार तथा वैश्विक संवाद की ओर सशक्त रूप से अग्रसर होगी।

चुनौतियाँ

अंग्रेज़ी के वर्चस्व के बीच हिन्दी की स्थिति

भारत में उच्च शिक्षा और व्यावसायिक क्षेत्रों में अंग्रेज़ी को प्राथमिकता मिलने से हिन्दी की उपयोगिता सीमित हो जाती है। यह स्थिति हिन्दी को शैक्षिक और शोध की प्रमुख भाषा बनने से रोकती है।

उच्च शिक्षा और तकनीकी क्षेत्रों में हिन्दी सामग्री की कमी

विश्वविद्यालयों और तकनीकी संस्थानों में गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तकों, शोध साहित्य और तकनीकी शब्दावली की कमी एक बड़ी चुनौती है। इस कमी के कारण विद्यार्थी और शोधकर्ता प्रायः अंग्रेज़ी पर निर्भर रहते हैं।

क्षेत्रीय भाषाओं और हिन्दी के बीच संतुलन

भारत की भाषाई विविधता में क्षेत्रीय भाषाओं की अस्मिता को बनाए रखना आवश्यक है। ऐसे में हिन्दी को राष्ट्रव्यापी भाषा के रूप में विकसित करते समय क्षेत्रीय भाषाओं के साथ संतुलन और सहकार सुनिश्चित करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।

सुझाव और समाधान हिन्दी में गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता

हिन्दी को शिक्षा और शोध की भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए आवश्यक है कि उच्च गुणवत्ता की पाठ्यपुस्तकें, तकनीकी सामग्री और शोध कार्य हिन्दी माध्यम में तैयार किए जाएँ। इससे विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं को अपनी भाषा में गहराई से अध्ययन का अवसर मिलेगा।

अनुवाद कार्य और डिजिटलीकरण को बढ़ावा

भारतीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर की महत्वपूर्ण शैक्षिक व शोध सामग्री का हिन्दी में अनुवाद कर उसे डिजिटल रूप में उपलब्ध कराना आवश्यक है। ई-संसाधन और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर हिन्दी सामग्री का विस्तार शिक्षा को आधुनिक और सुलभ बनाएगा।

शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में हिन्दी का समावेश

शिक्षक-प्रशिक्षण में हिन्दी को शामिल करने से शिक्षकों की क्षमता हिन्दी माध्यम में शिक्षण और शोध दोनों में बढ़ेगी। इससे वे विद्यार्थियों को बेहतर ढंग से मार्गदर्शन कर सकेंगे और हिन्दी शिक्षा का व्यावहारिक व शैक्षणिक दायरा और अधिक मजबूत होगा।

निष्कर्ष

नई शिक्षा नीति 2020 में हिन्दी भाषा को शिक्षा के सशक्त माध्यम और राष्ट्र की एकता के सूत्र के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। यह नीति स्पष्ट करती है कि मातृभाषा और भारतीय भाषाओं में शिक्षा प्राप्त करने से न केवल ज्ञान को गहराई से समझा जा सकता है, बल्कि विद्यार्थियों में आत्मविश्वास और सांस्कृतिक पहचान भी सुदृढ़ होती है। इस संदर्भ में हिन्दी को विशेष महत्व दिया गया है, क्योंकि यह सम्पर्क भाषा के रूप में विविध भाषाई समुदायों को जोड़ने की क्षमता रखती है।

© 2025 डॉ. समीना कुरैशी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

NEP-2020 ने उच्च शिक्षा, तकनीकी क्षेत्रों और डिजिटल संसाधनों में हिन्दी की उपयोगिता को भी प्रोत्साहित किया है, जिससे यह केवल साहित्यिक भाषा न रहकर ज्ञान-विज्ञान और शोध की भाषा के रूप में भी उभर सके। हिन्दी के प्रयोग से एक ओर राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता को बढ़ावा मिलेगा, वहीं दूसरी ओर भारत वैश्विक मंच पर अपनी भाषायी पहचान को मजबूती से प्रस्तुत कर सकेगा।
स्पष्ट है कि भविष्य में शैक्षिक, सामाजिक और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी का महत्व और बढ़ेगा। यह केवल शिक्षण की भाषा नहीं, बल्कि राष्ट्र की सांस्कृतिक शक्ति और विश्व में भारत की पहचान की धुरी बनेगी।

संदर्भ सूची

1. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय; 2020. खंड 1, अध्याय 4, पृ. 45–62.
2. शर्मा अ. नई शिक्षा नीति और भारतीय भाषाओं का भविष्य. वाराणसी: ज्ञान भारती प्रकाशन; 2021. खंड 2, अध्याय 3, पृ. 101–18.
3. पांडेय स. हिन्दी भाषा और शिक्षा नीति 2020: अवसर एवं चुनौतियाँ. शिक्षा विमर्श. 2022;14(1):34–49.
4. मिश्रा र. भाषा शिक्षा और नई शिक्षा नीति. लखनऊ: शोध भारती प्रकाशन; 2021. खंड 1, अध्याय 2, पृ. 55–72.
5. सिंह र. NEP 2020 में मातृभाषा आधारित शिक्षा की प्रासंगिकता. भारतीय शिक्षा पत्रिका. 2020;12(3):87–99.
6. गुप्ता न. उच्च शिक्षा में हिन्दी का महत्व: नीति और परिप्रेक्ष्य. भोपाल: हिंदी ग्रंथ अकादमी; 2022. खंड 3, अध्याय 5, पृ. 142–59.
7. चौधरी क. नई शिक्षा नीति 2020 और हिन्दी: एक समालोचनात्मक अध्ययन. शोध दिशा. 2021;18(2):201–16.
8. वर्मा स. भारतीय शिक्षा और मातृभाषा का संवर्धन. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 2023. खंड 2, अध्याय 6, पृ. 173–90.

Creative Commons (CC) License
This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2025 डॉ. समीना कुरैशी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/